जब रोशनी होती है

सार्त्रे के नाटक 'द फ्लाइज़' से प्रेरित

स्थान- काली धरती जहां हर चीज़ काली है। एक चौक जिसके बीच में एक ऊंचा चबूतरा है।

(पर्दा खुलने पर काले कपड़े पहने सहमे-सहमे से लोग निकल रहे हैं, लगता है वे किसी बड़ी आफत से डरे हुए हैं। एक नौजवान जिसने सफेद पोशाक पहनी हुई है, मंच पर आता है।)

नौजवान : *(इधर-उधर देखते हुए)* यह किस तरह की धरती है, जहां आदमी चल फिर रहे हैं पर उनके मुंह में जुबान नहीं है, जहां रोशनी की कोई किरण नहीं है, सब तरफ अंधेरा ही अंधेरा है। (काली पोशाक में एक बूढ़ी औरत निकलती है- उसके साथ एक बच्चा है, उसने भी काले कपड़े पहने हुए हैं। बच्चा उस नौजवान की तरफ देखता है, पर औरत उसे खींचती है। बच्चा फिर भी नौजवान की तरफ देखता है।)

नौजवान : ऐ बुजुर्ग औरत, तू इस बच्चे को क्यों खींच रही है?

औरत : तू नहीं जानता, अगर यह किसी सफेद चीज़ की तरफ देखेगा तो अंधा हो जाएगा।

नौजवान : क्यों?

औरत : हमारे देश में यह महीना मातम का महीना है, हम अपने गुनाहों का पश्चाताप कर रहे हैं।

नौजवान : क्या यह मासूम भी कोई गुनाह कर सकता है?

औरत : हर इंसान जब पैदा होता है, गुनाहों में लिपटा होता है।

नौजवान : यह तुम्हें किसने बताया है?

औरत : यह हमारी मुकद्दस किताब में लिखा है।

नौजवान : यह मुकद्दस किताब तुमने कभी पढ़ी है ?

औरत : नहीं, हमारे औलिया ने हमें सुनाई है– उसके पुरखों ने हमारे पुरखों को सुनाई थी, पीढ़ियों से यही सुनते आ रहे हैं कि हम गुनाह की पैदाइश हैं, इस कारण हमें पश्चाताप करना चाहिए– पर तू किस धरती का वासी है जहां के लोग दूध जैसे सफेद कपड़े पहन सकते हैं ?

नौजवान : मैं समंदर पार धरती का निवासी हूं, वहां सभी लोग सफेद कपड़े पहनते हैं, सभी हंसते हैं।

औरत : यह कैसे हो सकता है ? इंसान तो है ही गुनाहों का पुतला... यह बच्चा मेरा पोता है, मैं इसकी उंगली पकड़कर हर वक़्त अपने साथ रखती हूं, पर क्या मालूम यह मेरे बेटे का बेटा है भी या नहीं ?

नौजवान : क्यों ?

औरत : मैंने इसकी मां को किसी दूसरे मर्द के साथ देखा था, तब से मुझे शक है– बेशक इस बच्चे के नैन–नक्श बिल्कुल मेरे बेटे से मिलते हैं।

नौजवान : तो फिर तू इस शक को अपने मन से निकाल दे।

औरत : अगर शक को मन से निकाल दूंगी तो मुझे अपनी बहू में कोई गुनाह नहीं दिखेगा और हमारा औलिया कहता है कि हर इंसान गुनाह का पुतला है– और हां, तू यहां मत खड़ा हो नहीं तो हमारे बादशाह के सिपाही तुझे मार देंगे।

नौजवान : क्यों ?

औरत : आज के दिन केवल हमारा बादशाह या औलिया ही सफेद कपड़े पहन सकता है।

नौजवान : वे क्यों सफेद कपड़े पहन सकते हैं ?

औरत : क्योंकि उन्होंने कोई गुनाह नहीं किया है।

नौजवान : क्या वे इंसान नहीं हैं।

औरत : नहीं, वे देवता हैं।

नौजवान : यह तुम्हें किसने बताया है ?

औरत : यह हमारी मुकद्दस किताब में लिखा है कि बादशाह और औलिया कभी गुनाह नहीं कर सकते।

(नौजवान हंसता है)

औरत : तू हंस रहा है ? तू मुकद्दस किताब पर हंस रहा है ?

नौजवान : हां, मैं हंस रहा हूं, कुछ दिन बाद तू भी हंसेगी। कुछ समय बाद सब लोग हंसेंगे।

औरत : लगता है तेरी मौत तुझे यहां ले आई है। पर मैं यहां खड़ी क्या कर रही हूं ? मेरी बहू घर में अकेली है और वह हमेशा ऐसे मौके की तलाश में रहती है कि मैं बाहर जाऊं और वह किसी से 'आंख-मटक्का' करे और अपने गुनाहों की फेहरिस्त लंबी कर ले।

नौजवान : पर आज तो पश्चाताप का दिन है, रात की तरह काला दिन, आज खौफ के मारे कोई क्या गुनाह करेगा ?

(बूढ़ी औरत चली जाती है। पत्तों से ढंका एक बावरा-सा लड़का दूसरी ओर से मंच पर आता है।)

नंगा लड़का : गुनाह तो सारे होते ही रात के अंधेरे में हैं।

नौजवान : तू कौन ?

नंगा लड़का : मैं कोई नहीं और मैं सबकुछ- मुझे कहने लगे तू काले कपड़े पहन, मैंने कहा, न मैं काले पहनूंगा न सफेद- आदमी नंगा पैदा हुआ है उसे नंगा ही रहना चाहिए। तुम्हें पता है यह बूढ़ी अपनी बहू पर क्यों शक करती है ?

नौजवान : क्यों करती है ?

नंगा लड़का : जब यह जवान थी तो यह खुद 'आंख-मटक्का' करती थी, जो इसकी सास थी वह इस पर शक करती थी। यह काली धरती है, इस पर हरेक आदमी दूसरे पर शक करता है- सास बहू पर शक करती है- बहू सास पर करती है। बीवी ख़ाविंद पर शक करती है और ख़ाविंद बीवी पर, लेकिन हम पर कोई क्या शक करेगा, हम तो हैं ही नंगे।

नौजवान : तू बड़ा दिलचस्प आदमी है।

नंगा लड़का : हां, वो तो मैं हूं ही- मैं इस काली धरती के हर एक आदमी को जानता हूं- मैं बादशाह को जानता हूं, वह खुद सबसे बड़ा गुनाहगार है, पर उसने औलिया से मुकद्दस किताब में लिखवा रखा है कि बादशाह कभी कोई गुनाह नहीं कर सकता- पर मैं जानता हूं उसने क्या-क्या गुनाह किए हैं। बादशाह ने तख्त के लिए अपने बाप को ज़हर दिया, पर औलिया ने कहा, यह गुनाह

नहीं है, यह सियासत है... *(भेदभरे लहजे में)* इधर आ– तुझे पता है कि औलिया ने यह बात मुकद्दस किताब में क्यों लिखी थी? क्योंकि उसे बादशाह ने ढेर सारा सोना दिया था और हां, तुम्हें बादशाह के और गुनाह भी बताऊं... उसने हरी धरती की सारी दौलत छीनकर अपने महलों में भर ली है– उसने कहा कि देश पर संकट है, जो चार रोटियां खाते हैं, वे दो खाएं– जो बच्चे रोज़ाना दूध पीते हैं,वे हफ्ते में एक दिन पिएं, खुद मालूम है उसने क्या किया, अपने नौकरों को हुक्म दिया कि अब उसे पानी मांगने पर भी शराब दी जाए। उसके भोजन में बीस किस्म के व्यंजनों की बजाय पचास किस्म के व्यंजन परोसे जाएं।

नौजवान : पचास किस्म के?

नंगा लड़का : हां, खाने के लिए नहीं, सिर्फ देखने के लिए– जिसके रसोईखाने में जितनी ज़्यादा किस्म के व्यंजन होंगे, वह उतना ही बड़ा बादशाह माना जाएगा– और वह औलिया? मुझे उसके बारे में भी सबकुछ पता है, मैंने इन आंखों से बहुत कुछ देखा है।

नौजवान : इन आंखों से?

नंगा लड़का : हां, जब आदमी नंगा हो जाए, अपने ऊपर से पर्दा उतार फेंके तो उसकी आंखों के आगे से भी पर्दा उतर जाता है और वह बहुत सी चीज़ें देखने लगता है।

नौजवान : अच्छा!

नंगा लड़का : मैंने देखा, उसने एक गुफा बनाई हुई है, जिसे वह 'परमात्मा का घर' कहता है– वहां वह सारे काम करता है जो परमात्मा उसे करने के लिए कहता है।

नौजवान : परमात्मा करने के लिए कहता है?

नंगा लड़का : हां, परमात्मा अगर उसे कहता है, इस औरत को बच्चे की ज़रूरत है तो वह ज़रूरतमंद की ज़रूरत पूरी कर देता है। कुंआरी लड़कियों को पहले तो वह मुकद्दस किताब में से पढ़कर यह समझाता है कि उन्होंने किसी मर्द का सपना लेकर गुनाह किया है और फिर उन्हें गुफा में ले जाकर गुनाहों से मुक्ति दिलाता है।

नौजवान : तुम्हें कैसे पता?

नंगा लड़का : मैं भी एक लड़की बनकर वहां गया था, मुझे कहने लगा कि

परमात्मा का हुक्म है, अगर तुम गुनाह से मुक्ति चाहती हो तो कपड़े उतार दो, मैंने कपड़े उतार दिए, मैं नंगा हो गया, मुझे देखकर उसकी चीखें निकल गईं, क्योंकि उसके सारे गुनाह नंगे हो गए और मैं भी उस दिन से नंगा ही हूं।

नौजवान : तुम्हें उससे डर नहीं लगता?

नंगा लड़का : आदमी जब नंगा हो जाता है तो फिर वह किसी से नहीं डरता बल्कि लोग उससे डरते हैं।

नौजवान : तुम्हें बादशाह के सिपाहियों से डर नहीं लगता?

नंगा लड़का : नहीं, जब वे मुझे पकड़ने या मारने आते हैं तो मैं गोल चबूतरे पर चढ़ जाता हूं।

नौजवान : गोल चबूतरा?

नंगा लड़का : हां, इस गोल चबूतरे पर एक सच्चे आदमी को फांसी लगाई गई थी। वह मरा नहीं था, उसकी आत्मा अमर हो गई थी। अब जब भी कोई सच्चा आदमी इस चबूतरे पर चढ़ता है तो वह आत्मा उसमें प्रवेश कर जाती है और वह कभी भी नहीं मरता, उस पर कोई प्रहार काम नहीं करता। इसी कारण तो ये मुझे मार नहीं सकते, पर एक बात है... अगर कोई झूठा, पाखंडी या गुनाहगार चबूतरे पर चढ़ जाए...

नौजवान : पाखंडी... गुनाहगार!

नंगा लड़का : तो वह उसी वक्त धड़ाम से गिरता है और फिर कभी नहीं उठता। इसी कारण सिवाय मेरे, कोई दूसरा इस चबूतरे पर चढ़ता ही नहीं।

नौजवान : क्यों?

नंगा लड़का : क्योंकि औलिया ने अपनी किताब में से पढ़कर बता रखा है कि वे सभी गुनाहगार हैं– इसी कारण इस चबूतरे पर चढ़ने का कोई हौसला ही नहीं करता। मैं यहां तेरे साथ बातें करने बैठ गया जबकि आज तो मुझे फुर्सत ही नहीं है, आज तो मुझे बहुत कुछ देखना है।

नौजवान : बहुत कुछ देखना है?

नंगा लड़का : हां, आज गुनाहों के पश्चाताप का दिन है, आज इस काली धरती के लोग गुनाह भी करते रहेंगे और साथ ही साथ पश्चाताप भी करते रहेंगे।

(लड़का चला जाता है)

नौजवान : अजीब-अजीब बातें हैं इस काली धरती पर, गुनाह के अहसास में दबे हुए लोग, गुनाहों में मशगूल बादशाह-गुनाहों से मुक्ति दिलाते कपटी औलिया- सच के लिए फांसी चढ़ने वाली आत्माएं और एक नंगा आदमी। *(बाहर शोर सुनाई देता है।)* हांय, यह शोर कैसा है? शायद कुछ सिपाही आ रहे हैं। *(कुछ सिपाही एक औरत को घसीटते हुए आते हैं।)*

नौजवान : अरे रहमदिल इंसानो, तुम इस सुंदरी को कहां ले जा रहे हो?

सिपाही : रहमदिल इंसानो? तू हमें रहमदिल कहने वाला कौन है? हम कोई रहमदिल नहीं हैं, हम सभी गुनाहगार हैं- यह औरत भी गुनाहगार है, पर यह अपने गुनाह का पश्चाताप नहीं करती। इसलिए हम इसे औलिया के पास ले जा रहे हैं।

नौजवान : इसने क्या गुनाह किया है?

सिपाही : इसने आज काले कपड़े नहीं पहने।

सुंदरी : मैं क्यों पहनूं काले कपड़े?

सिपाही : ताकि तू अपने गुनाह का पश्चाताप कर सके।

सुंदरी : मैंने कोई गुनाह नहीं किया।

नौजवान : हां, इसने कोई गुनाह नहीं किया।

सिपाही : पर हमारी मुकद्दस किताब में यह लिखा है।

नौजवान : वह किताब मुकद्दस नहीं है।

सिपाही : हमारा औलिया कहता है कि वह मुकद्दस किताब है।

नौजवान : वह झूठ कहता है।

सिपाही : हमारे बादशाह का इंसाफ कहता है।

नौजवान : वह इंसाफ नहीं है।

सिपाही : तू यह कहने वाला कौन है?

नौजवान : एक इंसान।

सिपाही : हमारा औलिया तुम्हें भस्म कर देगा।

नौजवान : परवाह नहीं।

सिपाही : तुम्हें औलिया की परवाह नहीं? तू किस तरह का आदमी है? औलिया की परवाह तो बादशाह भी करते हैं, वे भी औलिया से डरते हैं।

नौजवान : मैं किसी औलिया से नहीं डरता।

सिपाही : तू तो शैतान की रूह है।

सिपाही 1 : चलो चलकर औलिया को खबर करें।

सिपाही 2 : पर इस सुंदरी का क्या करें?

सिपाही 1 : इसे यहीं छोड़ चलें।

सिपाही 2 : इस शैतान की रूह के पास?

सिपाही 1 : यह कौन सी शरीफ की रूह है।

सिपाही 2 : यह बात तो ठीक है।

सिपाही 1 : तो आ फिर देर क्यों करें।

(वे औरत को वहीं छोड़ जाते हैं- वह उस नौजवान की तरफ देखती है, पर आंखें बंद कर लेती है)

नौजवान : तूने आंखें बंद कर ली हैं?

सुंदरी : अगर मैं तुम्हें देखूंगी तो गुनाह हो जाएगा।

नौजवान : अगर मैं तेरी तरफ देखूं?

सुंदरी : तेरी और बात है।

नौजवान : क्यों?

सुंदरी : क्योंकि तू किसी दूसरी धरती का वासी है।

नौजवान : पर इस धरती पर भी तो इंसान ही रहते हैं।

सुंदरी : हम किसी वक़्त इंसान थे, पर अब...

नौजवान : पर अब... तू रुक क्यों गई?

सुंदरी : पर अब हम सिर्फ गुनहगार हो गए हैं।

नौजवान : मुझे तो अब भी इंसान जैसी लगती है- तेरी आवाज़ कितनी सुरीली है?

सुंदरी : मेरी आवाज़ सुरीली है?

नौजवान : बहुत सुरीली है और तू सुंदर भी बहुत है।

सुंदरी : मैं सुंदर हूं?

नौजवान : हां।

सुंदरी : पर मुझे कोई प्यार नहीं करता।

नौजवान : मैं तुम्हें प्यार करूंगा।

सुंदरी : तुम मुझे प्यार करोगे?

नौजवान : क्यों, मैं सुंदर नहीं हूं?

सुंदरी : तेरे जैसा सुंदर दूसरा कौन होगा, पर तूने तो सफेद कपड़े पहन रखे हैं, वे तुम्हें मार डालेंगे।

नौजवान : नहीं, वे मुझे नहीं मार सकते, मुझे अपने बचाव का तरीका आता है। मैं उस चबूतरे पर चढ़ जाऊंगा।

सुंदरी : नहीं, नहीं, उस पर मत चढ़ना, उस पर जो चढ़ता है, फिर कभी जिंदा वापिस नहीं उतरता। तुम मेरे साथ चलो, हम जंगल में छुप जाएंगे, जहां से हमें कोई भी नहीं ढूंढ सकता।

(उसे खींचकर बाहर ले जाती है, कुछ पल के लिए मंच खाली रहता है– औलिया और वे सिपाही जो सुंदरी को पकड़कर लाए थे, मंच पर आते हैं।)

सिपाही 1 : हां, वह यहीं खड़ा था।

सिपाही 2 : सफेद कपड़े पहने।

सिपाही 1 : कहने लगा... *(रुक जाता है)*

औलिया : क्या कहने लगा ?

सिपाही 1 : कहने लगा *(कांपने लगता है)*

औलिया : बकता क्यों नहीं ? क्या कहने लगा ?

सिपाही 1 : कहने लगा मुकद्दस किताब मुकद्दस नहीं है।

औलिया : हुंअ।

सिपाही : कहने लगा तुम्हारा औलिया *(रुक जाता है)*

औलिया : तुम्हारा औलिया ?

सिपाही : तुम्हारा औलिया *(कांपने लगता है)*

औलिया : कांप क्यों रहा है ?

सिपाही : जी, बात ही ऐसी है– कहने लगा, तुम्हारा औलिया झूठ कहता है, तुम्हारे बादशाह का इंसाफ, इंसाफ नहीं है। मैंने कहा, तू यह कहने वाला कौन है– उसने कहा, मैं इंसान हूं। मैंने कहा, हमारा औलिया तुम्हें भस्म कर देगा, कहने लगा, कोई परवाह नहीं। मैं किसी औलिया से नहीं डरता, वह बहुत गुस्ताख़ है जी– वह बहुत पापी है जी, वह बहुत गुनहगार है जी, वह शैतान की आंत है जी, उसे मार दो जी, उसे भस्म कर दो जी।

औलिया : मैं कहता हूं बकवास बंद कर।

सिपाही : बंद कर दी जी।

औलिया : तुम यहां से चले जाओ, मैं खुद उससे निपट लूंगा।

सिपाही : हां जी, आप खुद ही निपट लेना जी।

(वे चले जाते हैं– औलिया अकेला टहलता है और एक जगह

जाकर ठहर जाता है)

औलिया : *(अपने आप से)* तो इस धरती पर एक इंसान आ ही गया। बादशाह का आदेश था कि इस काली धरती पर कोई सफेद लिबास वाला इंसान न आए- पर काली धरती के सिपाही भी रिश्वतखोर हो गए हैं, वे अपना फ़र्ज़ नहीं निभाते।

(नंगे लड़के का प्रवेश)

नंगा लड़का : पर यह रिश्वत लेनी उन्हें सिखाई किसने ?

औलिया : तू कौन है ?

नंगा लड़का : पहचाना नहीं... मैं नंगा आदमी।

औलिया : तू अभी मरा नहीं ?

नंगा लड़का : जब तक कपट जिंदा है, तब तक उसे नंगा करने के लिए मैं जिंदा हूं।

औलिया : मैं तेरा गला दबा दूंगा, तेरी आवाज़ हमेशा के लिए बंद कर दूंगा।

(उसे पकड़ने के लिए दौड़ता है, वह छलांग मारकर चबूतरे पर चढ़ जाता है। औलिया बेबस।)

नंगा लड़का : *(हंसता हुआ)* तू मुझे नहीं मार सकता, तू पापी है, कपटी है।

औलिया : मैंने क्या पाप किया है ?

नंगा लड़का : अपने दिल से पूछ।

औलिया : मैंने जो कुछ किया है, मुकद्दस किताब के लिए किया है।

नंगा लड़का : नहीं, तूने सिर्फ अपने लिए किया है।

औलिया : मैंने लोगों को खुदा से डरना सिखाया है।

नंगा लड़का : खुदा से नहीं, अपने से, बादशाह से- तू बादशाह का ज़रखरीद गुलाम है।

औलिया : नहीं, बादशाह को लोगों पर राज़ करने के लिए मेरी ज़रूरत है।

नंगा लड़का : आखिर सच बोल ही गया- बादशाह को तेरी ज़रूरत है और तुम्हें बादशाह की, और तुम दोनों मिलकर लोगों को खूब मूर्ख बना रहे हो।

औलिया : पर लोग हैं ही मूर्ख।

नंगा लड़का : हां, अगर मूर्ख न होते तो तुम लोगों से क्यों डरते ? पर यह कोई ज़रूरी नहीं कि वे सदा ही मूर्ख रहेंगे।

औलिया : वे हमेशा ही मूर्ख रहेंगे- वे पीढ़ियों से मूर्ख हैं।

नंगा लड़का : यह तू कह रहा है ?

औलिया : हां, हां, यह मैं कह रहा हूं- पीढ़ी दर पीढ़ी हमारे बुजुर्ग उन्हें कभी मौत का डर दिखाकर, कभी दोजख का डर दिखाकर और कभी चौरासी का डर दिखाकर मूर्ख बनाते रहे हैं। आज मैं गुनाह का डर दिखाकर उन्हें मूर्ख बना रहा हूं।

नंगा लड़का : आज तू बड़ा सच बोल रहा है।

औलिया : हां, सच बोल रहा हूं, एक बात सुन ले... अगर तू मेरे काबू में आ गया तो मैं तुम्हें जिंदा नहीं छोड़ूंगा।

नंगा लड़का : ओ काली धरती के औलिया, मेरी मौत अब तेरे वश में नहीं है, पर तू मेरे से डर मत, तू अपना कारोबार जारी रख, मुझे इसमें बहुत दिलचस्पी है। मैं उस दिन का इंतज़ार करूंगा जब तेरा कपट चौराहे में नंगा होगा।

(लड़का हंसता-हंसता गायब हो जाता है। औलिया इधर-उधर टहलता है, बादशाह सिपाहियों के साथ आता है।)

बादशाह : बुजुर्गवार, ये सिपाही बता रहे हैं कि समंदर पार से एक इंसान यहां आ गया है।

औलिया : मुझे भी यही पता चला है, बादशाह सलामत।

बादशाह : पर वह है कहां ?

सिपाही : हुजूर, हम उस औरत को और उसे यहीं छोड़कर गए थे।

बादशाह : यहीं छोड़कर गए थे तो क्या उन्हें धरती निगल गई ?

सिपाही : निगल ही गई जी।

बादशाह : सिपाहियों को चारों तरफ दौड़ाओ- उस सफेद लिबास वाले नौजवान को हमारे सामने पेश करो।

(सिपाही-पहरेदार चले जाते हैं- बादशाह और औलिया दोनों परेशान हैं।)

बादशाह : मान्यवर, आपने यह सबकुछ सुना है ?

औलिया : सुना है, बादशाह सलामत और यह भी सुना है कि वह पवित्र किताब से भी नहीं डरता।

बादशाह : उसे डरना ही पड़ेगा, अगर वह इस धरती पर रहना चाहता है तो उसे इस पवित्र किताब से डरना ही पड़ेगा।

औलिया : हां, बादशाह सलामत, अगर वह पवित्र किताब से डरेगा तभी तो बादशाह के कानून से डरेगा।

बादशाह : पर यह आश्चर्य की बात है कि वह पवित्र किताब से नहीं डरता... क्या उसने ज़िंदगी में कभी गुनाह नहीं किया ?

औलिया : यह कैसे हो सकता है कि उसने कभी गुनाह न किया हो- यह बात मेरे और आपके दरम्यान है। बादशाह सलामत, इस धरती पर जब भी कोई बच्चा होश संभालता है तो उसे गुनहगार बनाने के लिए हर तरीका अपनाया जाता है।

बादशाह : वह किस तरह ?

औलिया : यह कोशिश की जाती है कि उसे भरपेट रोटी न मिले, जिंदगी में पहला गुनाह वह उस वक़्त करता है जब किसी दूसरे की रोटी को ललचाई नज़रों से देखता है।

बादशाह : बहुत खूब- मैं समझता हूं, उस वक़्त आप पवित्र ग्रंथ लेकर उनके पास पहुंच जाते हो कि पराई चीज़ को देखना गुनाह है।

औलिया : यहीं बस नहीं, मैं उन्हें खुदा का कानून बताता हूं कि कुछ लोग भूखे रहने के लिए ही पैदा हुए हैं।

बादशाह : खूब, आप उसे कभी सोचने का मौका ही नहीं देना चाहते कि वह भूखा क्यों है ?

औलिया : हां, पर यह बात इतनी आसान नहीं है- कभी-कभी कोई मासूम बच्चा अपने मां-बाप से पूछ ही लेता है कि तुम इतनी मेहनत करते हो फिर भी भूखे रहते हो, जबकि बादशाह और उसके अमीर कुछ नहीं करते फिर भी भूखे नहीं रहते। वे छत्तीस प्रकार के भोजन खाकर मोटे क्यों हो रहे हैं ?

बादशाह : अच्छा, तो वे पूछ ही लेते हैं कि हम मोटे क्यों हैं और वे पतले क्यों हैं ?

औलिया : हां।

बादशाह : उस वक़्त पवित्र ग्रंथ से तुम यह पढ़कर सुनाते हो कि राजा और उसके अमीरों ने पिछले जन्म में नेक काम किए हैं।

औलिया : हां, मैं यह सब कुछ उन्हें बताता हूं और वे इसे अपनी तकदीर मान लेते हैं। सदियों से हमारे और आपके पुरखों में यह समझौता चला आ रहा है।

बादशाह : मैं आपके काम से बहुत खुश हूं, मान्यवर बुजुर्ग, और मैं समझता हूं कि मेरा और मेरे पुरखों का आपको और आपके पुरखों को दिया गया सोना अपनी पूरी कीमत वसूल रहा है।

औलिया : हां बादशाह सलामत, मैं अपना फर्ज़ पूरी ईमानदारी से निभा रहा हूं– मेरी कोशिश रहती है कि आपकी प्रजा किसी–न–किसी गुनाह के अहसास के नीचे दबी रहे और आपके आदेशों को मानती रहे, पर मुझे गिला है कि आपके सिपाही मेरा छोटा सा काम नहीं कर सके।

बादशाह : यह आप क्या कह रहे हैं– आपका काम? क्या हमारे और आपके काम अलग हैं? आप जुबान से कहो तो सही, जिसका सिर कहोगे उतारा जा सकता है, पर ऐसा कौन नामुराद है जो काली धरती पर आपके सामने सिर उठाता है?

औलिया : एक नंगा आदमी।

बादशाह : वो, वो नंगा आदमी, वो पागल सा, पर उससे आपको क्या खतरा हो सकता है?

औलिया : सिर्फ मुझे ही नहीं, आपको भी खतरा है– दरअसल हर उस आदमी को उससे खतरा है जिसने खुद को किसी न किसी पर्दे या मुखौटे में छुपा रखा है। वह खुद नंगा है, इसलिए दूसरों के पर्दे उतारना उसका शगल है। मुझे खतरा ही सिर्फ उससे है।

बादशाह : मैं आज ही उसका बंदोबस्त करता हूं।

नंगा लड़का : आज क्यों? अभी करो– नंगा हाज़िर है।

औलिया : तू बहुत गुस्ताख है– तूने बादशाह सलामत को भी सलाम नहीं किया।

नंगा लड़का : नंगा खुद बादशाह है– वह किसी को क्यों सलाम करे।

बादशाह : तुम्हें कोई डर नहीं?

नंगा लड़का : डर उसे होता है जिसे कुछ खोने का डर हो– नंगे का कोई क्या उतार लेगा?

बादशाह : तू इस बुजुर्ग औलिया को तंग करना छोड़ दे।

नंगा लड़का : यह औलिया झूठ बोलना छोड़ दे।

औलिया : क्या मैं झूठ बोलता हूं?

नंगा लड़का : एक सिरे से।

बादशाह : क्या जो कुछ पवित्र ग्रंथ में लिखा है, वह झूठ है?

नंगा लड़का : वह झूठ नहीं था, पर जब से इसने और इसके पुरखों ने आपसे सोना लिया है इसने और इसके पुरखों ने इसमें झूठ घुसेड़ दिया है।

बादशाह : तू मेरे पुरखों पर इल्ज़ाम लगा रहा है ?

नंगा लड़का : हां, लगा रहा हूं, तो फिर ?

बादशाह : मैं तेरा सिर कलम कर दूंगा।

नंगा लड़का : कर दो, तुम बहुत देर से मेरा सिर कलम कर रहे हो, पर यह सिर है कि उतरता ही नहीं। फिर से मेरे धड़ से जुड़ जाता है।

औलिया : बादशाह सलामत, जब तक यह इस चबूतरे पर पैर रखकर खड़ा है, इसका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

बादशाह : अजीब बात है, मैं अपनी धरती पर ही किसी का कुछ नहीं बिगाड़ सकता, फिर मैं किस बात का बादशाह हूं, मैं इस चबूतरे को ढहा दूंगा।

औलिया : पर इसे गिराएगा कौन? इस चबूतरे पर जिंदा पैर वही रख सकता है, जिसने कोई गुनाह न किया हो।

बादशाह : इसे आप क्यों नहीं गिराते, आप तो पवित्र ग्रंथ के मालिक हैं, आपके नज़दीक तो गुनाह कभी नहीं आया।

(लड़का ज़ोर से हंसता है।)

बादशाह : तू हंस रहा है।

नंगा लड़का : हां हंस रहा हूं।

बादशाह : क्यों ?

नंगा लड़का : आपकी बात पर।

बादशाह : मेरी बात पर ?

नंगा लड़का : क्यों, बादशाह की बात पर कोई हंस नहीं सकता ?

बादशाह : नहीं।

नंगा लड़का : बादशाह अगर मूर्खों वाली बात करे तो मैं ज़रूर हंसूंगा।

बादशाह : मूर्खों वाली बात ?

नंगा लड़का : हां, इससे बड़ी मूर्खता की बात क्या हो सकती है, जब बादशाह यह समझे कि औलिया ने कोई गुनाह नहीं किया, औलिया से पूछो कि उसने ज़िंदगी में कौन-सा गुनाह नहीं किया? यह अलग बात है कि उसने सब कुछ पवित्र ग्रंथ के पर्दे में किया है, जिस तरह आपने हर गुनाह सियासत और कानून के पर्दे में किया है।

बादशाह : बकवास बंद कर।

नंगा लड़का : नहीं करता, फिर ?

(लड़का हंसे जा रहा है, बादशाह गुस्से में कांप रहा है।)

औलिया : आप इस नंगे आदमी की बातों की तरफ ध्यान न दो बादशाह सलामत।

नंगा लड़का : *(हंसते हुए)* कुछ लोग समझते हैं कि अगर वे सफेद कपड़े पहन लेंगे तो उनके गुनाह छुप जाएंगे, पर नंगे आदमी की आंखें सबकुछ देख लेती हैं।

(इसी दौरान बाहर शोर होता है, सिपाही नौजवान और उस लड़की को लेकर आते हैं। लड़की सहमी हुई है।)

बादशाह : तो यह नौजवान है जो किसी पवित्र ग्रंथ से नहीं डरता, जिसे बादशाह के कानून का भी खौफ़ नहीं है।

सिपाही : हां जनाब, हमने इसे जंगल में से ढूंढा है।

औलिया : तो ये आज पश्चाताप के पवित्र दिन जंगल में रंगरलियां मना रहे थे?

नंगा लड़का : कोई रब्ब की गुफा में रंगरलियां मनाते हैं और कोई रब्ब के जंगलों में।

बादशाह : तू चुप कर।

नंगा लड़का : *(अपने आप से)* हां नंगे आदमी, तू चुप कर, ऐसा दिलचस्प तमाशा तुम्हें फिर कब देखने को मिलेगा।

बादशाह : तू इस धरती का वासी है, नौजवान?

नौजवान : मैं समंदर पार उस धरती का निवासी हूं, पर यह धरती भी मेरी अपनी है क्योंकि यहां भी इंसान रहते हैं। यह अलग बात है कि वे अपने आपको इंसान समझते नहीं हैं।

बादशाह : क्या तुम्हें इस धरती के कानून का पता है?

नौजवान : इंसानों की धरती के इंसानों वाले सारे कानूनों से मैं वाकिफ हूं।

बादशाह : तो फिर तुमने काले कपड़े क्यों नहीं पहने?

नौजवान : क्योंकि यह इंसानों वाला कानून नहीं है– हंसती-खेलती ज़िंदगी को ख्वामख्वाह संकट में झोंक देना, प्राकृतिक ज़रूरतों को गुनाह कहना इंसानियत नहीं है।

बादशाह : क्या तुम्हें पता नहीं कि आज गुनाहों के पश्चाताप का दिन है, इसलिए आज काले कपड़े ज़रूरी हैं।

नौजवान : मैं तो समझता हूं कि जिन्हें आज काले कपड़े पहनने चाहिए थे, उन्होंने आज सफेद पहन रखे हैं।

बादशाह : क्या मतलब ?

नौजवान : बादशाह सलामत, इस धरती पर जितने भी गुनाह होते हैं, उनकी सबसे ज़्यादा जिम्मेदारी आप पर है, क्योंकि आप यहां के मालिक हैं, इस निजाम के कर्ता-धर्ता हैं।

(लड़का ताली बजाता है।)

बादशाह : कानून का मालिक मैं ज़रूर हूं पर गुनाहों का जिम्मेदार मैं कैसे हुआ ?

नौजवान : बादशाह सलामत, जिस निजाम में एक आदमी को रोटी न मिले, अगर वह पेट की आग बुझाने के लिए किसी दूसरे से रोटी छीनने को मजबूर हो तो यह कसूर किसका है ?

बादशाह : छीनने वाले का...।

नौजवान : क्यों ?

बादशाह : उसे खुदा की रज़ा माननी चाहिए और शांति बनाए रखनी चाहिए।

औलिया : मुकद्दस किताब यही कहती है।

नौजवान : हां मुकद्दस किताब यही कहती है कि शांति रखनी चाहिए पर पेट की आग कहती है कि शांति नहीं रखी जा सकती।

बादशाह : जब खाने वाले मुंह बढ़ते जा रहे हैं तो सबके लिए रोटी कहां से आए ?

नौजवान : अगर आप अपने लोगों को रोटी नहीं दे सकते, रोजगार नहीं दे सकते, तो फिर किस बात के बादशाह हो ? क्या तुम्हारी बादशाहत इसी बात में ही है कि लोगों को काले कपड़े पहना दो, उन्हें बंदी बनाकर कानून का काला डंडा उनके सिर में मारो ? जवाब दो, मेरा आपसे यह सीधा सवाल है।

बादशाह : ज़रूरी नहीं कि बादशाह हर एक सवाल का जवाब दे।

नौजवान : तो फिर यह भी ज़रूरी नहीं है कि प्रजा बादशाह के हर कानून को स्वीकार करे।

बादशाह : सदियों से लोग यह स्वीकार करते आए हैं।

नौजवान : सदियों से लोग बगावत भी करते आए हैं।

(बादशाह गुस्से से लाल-पीला होता है। वह नौजवान की तरफ गुस्से से देखता है। सिपाही नौजवान को चुप करवाने के लिए हरकत में आ जाता है।)

बादशाह : ठहरो- नौजवान जो कुछ तू कह रहा, तुम्हें पता है, इसकी सजा

मौत है, पर पता नहीं क्यों मुझे तुम पर तरस आ रहा है।

नौजवान : तरस?

बादशाह : हां तरस, तू इस धरती पर आया है, इसलिए तू मेरी प्रजा है और प्रजा पर तरस करना एक बादशाह का फर्ज़ है।

नौजवान : मुझे इस दस्तूर का पता है और यह भी पता है कि एक बादशाह प्रजा पर तरस कर सकता है पर प्रजा को इंसाफ नहीं दे सकता।

बादशाह : *(गुस्से से)* ले जाओ इस बागी को और इसका सिर कलम कर दो।

सुंदरी : नहीं... नहीं... यह ज़ुल्म है, यह ठीक नहीं है।

(सिपाही नौजवान को पकड़कर खींचते हैं।)

औलिया : बादशाह सलामत, इस धरती के उसूल के मुताबिक इससे पहले कि इसकी ज़िंदगी को ख़त्म कर दिया जाए, यह ज़रूरी है कि इससे गुनाह का इंतराफ करवाया जाए।

नौजवान : मैंने कोई गुनाह नहीं किया।

औलिया : तेरा गुनाह तेरे अंदर से खुद-ब-खुद बोलेगा, इस लड़की से बोलेगा, जिसे तुमने अपने गुनाह में भागीदार बनाया है। इजाज़त हो तो मैं इस लड़की से कुछ प्रश्न पूछ सकता हूं?

बादशाह : हां, इस लड़की से पूछा जाए।

औलिया : तू इस नौजवान को कब से जानती है?

सुंदरी : थोड़ी देर पहले से।

औलिया : यह तुम्हें कहां मिला?

सुंदरी : यहीं, ये सिपाही मुझे घसीटे जा रहे थे, जब इस नौजवान ने इन्हें रोका।

औलिया : गोया उसने कानून को अपने हाथ में लिया?

सुंदरी : नहीं, उसने सिर्फ पूछा कि मुझे क्यों पकड़ा गया है। सिपाहियों ने कहा कि यह मनहूस है। इसने गुनाह किया है। इसने कहा कि धरती पर कोई भी आदमी मनहूस नहीं है- कोई गुनहगार नहीं है।

औलिया : यानी मुकद्दस किताब को गलत बताया।

सुंदरी : सिपाहियों ने मुझे छोड़ दिया और तुम्हें बुलाने चले गए।

औलिया : और बाद में इसने तुम्हें क्या कहा?

सुंदरी : यही कि मेरी आवाज़ सुरीली है, मैं बहुत सुंदर हूं।

औलिया : यानी तेरी तारीफ करके तुम्हें गुनाह के लिए उकसाया?

सुंदरी : मुझ से इस तरह की बातें आज तक किसी ने नहीं की, सभी मुझे मनहूस कहते हैं।

सिपाही 1 : यह है ही मनहूस, जब यह पैदा हुई तो इसने अपने बाप को खा लिया।

औलिया : यानी इसके पिछले गुनाहों का एतराफ करने के लिए उस नेक आदमी ने अपनी जान दे दी।

सुंदरी : नहीं, मेरी मां ने बताया था कि वे लंबे समय से बीमार थे और उस साल ज़्यादा सर्दी होने के कारण उनकी मौत हो गई।

औलिया : और फिर?

सुंदरी : जब होश संभाला तो मां भी मुझे छोड़कर चली गई, मैं यतीम हो गई।

औलिया : यानी तेरा गुनाह इतना बड़ा था कि उसका ऐतराफ करने के लिए तेरी मां को भी जान देनी पड़ी।

सुंदरी : जब मैं बड़ी हुई तो मुझे यतीम जानकर सब तरफ से भूखी निगाहों ने खाना चाहा।

बादशाह : यह बड़ी पुरानी रवायत है। हर सुंदर लड़की यह समझती है कि आसपास की निगाहें सिर्फ उसे ताक रही हैं।

औलिया : और यह बात भी सच है कि अगर वे उसे न देखें तो उस सुंदर लड़की को सदमा लगेगा कि उसकी तरफ किसी ने नहीं देखा, पर क्या इस नौजवान ने भी तुम्हें उन्हीं नज़रों से देखा?

सुंदरी : नहीं, इसने मुझे प्रेम की नज़र से देखा।

औलिया : यानी तू पहचान सकती है कि कौन-सी नज़र प्रेम भरी है और कौन सी दूसरी। खैर, यह साफ है कि इसने तुम्हें गुनाह के लिए उकसाया।

सुंदरी : प्रेम करना कोई गुनाह नहीं है।

औलिया : है। और फिर तुम्हें यह जंगल में ले गया?

सुंदरी : नहीं, मैं इसे ले गई।

औलिया : एक ही बात है, तू उसे ले गई या वह तुम्हें ले गया।

सुंदरी : पर मैं अपना दोष स्वीकार करती हूं।

औलिया : दोष या गुनाह?

सुंदरी : एक ही बात है।

औलिया : नहीं, एक बात नहीं है, अपने दोष के लिए तुम्हें बादशाह के कानून के सामने जवाबदेह होना पड़ेगा और गुनाह के लिए मुकद्दस किताब के सामने।

(लड़की घबरा जाती है।)

नौजवान : मज़लूम के लिए कानून और मुकद्दस किताब दोनों ही चक्की के पाट हैं, जिनमें उसे पिसना है।

औलिया : तो तू यह मानता है कि तूने और इस लड़की ने जुर्म भी किया है और गुनाह भी।

नौजवान : मेरे मानने से क्या फर्क पड़ता है। इससे भी फांसी है और उससे भी।

बादशाह : इस गुस्ताख़ से और बात करने की ज़रूरत नहीं, तू फांसी के लिए तैयार हो जा।

नंगा लड़का : साथी, तू इधर आ जा।

नौजवान : मैं?

नंगा लड़का : हां, मुझे पता चल गया है कि तूने कोई गुनाह नहीं किया।

औलिया : हां... हां... ये वहां चला जाए, हमें क्या ऐतराज़ हो सकता है। एक गुनहगार खुद अपनी मौत मर जाएगा।

सुंदरी : नहीं नहीं, तुम वहां मत जाना, वहां गया कोई जिंदा वापिस नहीं आया, सिवाय उस नंगे आदमी के और वह पागल है।

नौजवान : नहीं, वह हम सबसे समझदार है, मैं उस चबूतरे पर ज़रूर जाऊंगा।

बादशाह : हां... हां... जा।

औलिया : बादशाह सलामत का तुम्हें हुक्म है कि चबूतरे पर चढ़कर तू अपनी नापाक ज़िंदगी को खत्म कर दे।

(सब तरफ चुप है, एक सहम-सा पैदा हो गया है। नौजवान आगे बढ़ता है, पर लड़की उसके पैर पकड़ लेती है। 'नहीं... नहीं' कहती है। खींचतान-सी मची है लेकिन नौजवान चबूतरे पर चढ़ जाता है, कुछ देर तक सब दम साधकर बैठे रहते हैं।)

सिपाही 1 : हांय! इसे तो कुछ नहीं हुआ?

सिपाही 2 : यह अभी जिंदा है?

सिपाही 1 : देखो तो किस शान से खड़ा है?

सिपाही 2 : वह नंगा आदमी उसे गले मिल रहा है।

बादशाह : खामोश, सिपाहियो, इसे नीचे उतारो।

(सिपाही एक-दूसरे को देखते रहते हैं।)

बादशाह : मैं कहता हूं, इसे नीचे उतारो।

सिपाही 1 : बादशाह सलामत, हम गुनहगार लोग इस चबूतरे पर कैसे चढ़ सकते हैं?

सिपाही 2 : हम, जो बच्चे पालने के लिए हर रोज़ गुनाह करते हैं, हम इस चबूतरे पर चढ़कर अपनी मौत कैसे मोल ले सकते हैं?

सिपाही 1 : हां, हम गुनहगार हैं, हमने तो काले कपड़े भी पहन रखे हैं।

नौजवान : बादशाह सलामत, आप क्यों नहीं आते, आपने तो कभी गुनाह नहीं किया, आपने तो सफेद कपड़े पहने हुए हैं।

बादशाह : *(उसकी बात को टालते हुए)* औलिया मुकद्दस, यह आपके इम्तिहान का दिन है, अगर आपकी रूह मुकद्दस है तो इस चबूतरे पर चढ़कर इस नौजवान को नीचे उतारो।

(नंगा आदमी ताली बजाता है।)

औलिया : बादशाह सलामत, यह केवल मेरे इम्तिहान का दिन नहीं है, आपके इम्तिहान का भी दिन है, पर आप शांत रहें। इस नौजवान को नीचे उतारने का तरीका मैं जानता हूं, या तो वह नीचे आएगा या फिर अपने गुनाह की बदौलत वहीं खड़ा भस्म हो जाएगा। *(नौजवान की तरफ)* ऐ नौजवान, तुम्हें बादशाह का हुक्म है कि इस चबूतरे से नीचे आ जा, नहीं तो इस सुंदरी को तेरे लिए जान गंवानी पड़ेगी।

सुंदरी : नहीं... नहीं... तुम नीचे मत आना, मैं अपनी जान दे दूंगी, मेरी जान का क्या है, मैं ठहरी मनहूस।

नौजवान : ओ झूठे बादशाह के दंभी औलिया! तूने अपने दंभ को बहुत जल्दी नंगा कर दिया है और इतिहास के हर बुज़दिल हुक्मरां की तरह अबला पर ज़ुल्म के पर्दे में अपनी हार को छिपाना चाहता है।

बादशाह : बुज़दिल की तरह?

नौजवान : जब कोई भी सूरमा किसी बादशाह को चुनौती देता है या बादशाह के ज़ुल्म के आगे घुटने टेकने से इनकार करता है तो हुक्म की तामील करवाने के लिए उसकी मां, बहन, महबूबा को तंग करके उसे झुकाने का प्रयास किया जाता है।

औलिया : *(धीरे से)* बादशाह सलामत, अब अगर यह नीचे नहीं आएगा तो इस लड़की से बेवफाई का गुनाह करेगा, अगर नीचे आ गया तो आपके सिपाहियों के कब्जे में आ जाएगा। *(ऊंची आवाज़ में)* नौजवान, तुम्हें सोचने का वक्त दिया जाता है, या तो इस चबूतरे से नीचे आ जा नहीं तो इस लड़की का सिर धड़ से अलग कर दिया जाएगा।

सुंदरी : मैं इसके लिए तैयार हूं, इस नौजवान के लिए सैंकड़ों ज़िंदगियां कुर्बान करने के लिए तैयार हूं, बेशक आज पहली दफा मैंने अपनी ज़िंदगी से प्यार किया है और इसकी कीमत जानी है।

नौजवान : अरे कपटी बादशाह की प्रजा के लोगो, क्या तुम चुप खड़े रहोगे? क्या तुम चाहोगे कि एक बेगुनाह का सिर कलम कर दिया जाए? *(लोग चुप हैं)* क्या तुम चाहोगे कि इस धरती पर हमेशा काली रात रहे? *(लोग चुप हैं)* क्या तुम चाहेगे कि इस धरती पर हमेशा मातम छाया रहे? बच्चे सहमे रहें, वे हंस न सकें... उनके चेहरे पर कभी रौनक न आए– बोलो... तुम्हें एक न एक दिन बोलना ही पड़ेगा और वह दिन आ गया है– क्या तुम सूरज की किरणें देखने से इनकार करते हो?

लोग : नहीं।

नौजवान : तो फिर आज सच और झूठ का फैसला हो जाने दो।

लोग : हां, आज फैसला हो जाना चाहिए।

नौजवान : जो अपने आपको सच्चा समझता है, जो यह समझता है कि उसने ज़िंदगी में कोई गुनाह नहीं किया, वह इस चबूतरे पर आने का हौसला करे।

एक आवाज़ : पहले औलिया जाए।

दूसरी आवाज़ : हां हां, पहले औलिया जाए।

(औलिया उलझन में है)

एक आवाज़ : पहले बादशाह जाए।

दूसरी आवाज़ : हां, हां, पहले बादशाह जाए।

(बादशाह घबरा जाता है)

सुंदरी : नहीं, पहले मैं जाऊंगी।

बादशाह : तू? जिसने ज़िंदगी में हर गुनाह किया है?

औलिया : बादशाह सलामत, इसे मत जाने दो।

बादशाह : तुम डरते क्यों हो औलिया?

(लड़की चबूतरे पर चढ़ती है। इस दौरान मौत जैसी चुप्पी है, सिवाय नंगे आदमी के जो दुआ का मूक अभिनय कर रहा है– कोई हिलता नहीं... लड़की धीरे–धीरे जाकर नौजवान की बांहों में सिमट जाती है। उसके चेहरे पर रौशनी आती है। लोग हैरान हैं... औलिया और बादशाह खिसकने की कोशिश करते हैं।)

नौजवान : मेरी धरती के लोगो, ज़िंदगी जीना कोई गुनाह नहीं है, यह कुदरत का वरदान है, पर कुछ स्वार्थी लोग चाहते हैं कि ज़िंदगी जीने का हक़ सिर्फ उनको ही हो, वे लोग कभी औलिया का रूप धारण कर लेते हैं तो कभी बादशाह का। सारे गुनाह वे खुद करते हैं। पर गुनाहों का खौफ दूसरों के दिलों पर डालते हैं क्योंकि वे खुद दूसरों की मेहनत पर अय्याशी करना चाहते हैं और करते हैं। आओ, आज इसका फैसला करें। आप में से जो चाहते हैं कि ज़िंदगी को खुशी से जिया जाए और धरती पर ऐसा समाज बनाया जाए जिसमें कोई दूसरे की मेहनत की लूट खसोट न कर सके, वे इस चबूतरे पर आ जाएं– यकीन रखें, यह जगह ज़िंदगी के लिए है, उसकी जीत के लिए, उसकी जय–जयकार के लिए।

(लोग चबूतरे की तरफ बढ़ते हैं, औलिया और बादशाह वहां से खिसकते दीखते हैं। सारे साधारण लोग एक–एक करके चबूतरे पर चढ़ जाते हैं, सबसे अंत में एक बूढ़ी औरत आती है, वह सीढ़ियों पर चढ़ने में असमर्थ है लेकिन घिसट–घिसट कर चढ़ती है। उसका अभिनय यह दर्शाता है कि ज़िंदगी के अंतिम पड़ाव में भी जीने की इच्छा मिटती नहीं है। वह धीरे–धीरे चबूतरे पर चढ़ जाती है। एक विशेष ढंग से ज़िंदगी की जीत का चिह्न बनाकर सभी खड़े हो जाते हैं।)